दुःख का अधिकार

कक्षा - नवीं (9th) नियत कार्य - 3

निम्नलिखित गद्यांशों और उन पर आधारित प्रश्नोत्तरों को ध्यान से पढ़िए–

1 मनुष्यों की पोशाकें उन्हें विभिन्न श्रेणियों में बाँट देती हैं। प्राय: पोशाक ही समाज में मनुष्य का अधिकार और उसका दर्जा निश्चित करती है। वह हमारे लिए अनेक बंद दरवाज़े खोल देती है, परंतु कभी ऐसी भी परिस्थिति आ जाती है कि हम ज़रा नीचे झुककर समाज की निचली श्रेणियों की अनुभूति को समझना चाहते हैं। उस समय यह पोशाक ही बंधन और अड़चन बन जाती है। जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देतीं, उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती है। *(पृष्ठ सं०–14)*

प्रश्न

(क) पोशाकें मनुष्य को कैसे बाँटती हैं?

(ख) पोशाक कब अड़चन बन जाती है?

(ग) पाठ तथा लेखक का नाम लिखिए।

2 ज़िंदा आदमी नंगा भी रह सकता है, परंतु मुर्दे को नंगा कैसे विदा किया जाए? उसके लिए तो बजाज की दुकान से नया कपड़ा लाना ही होगा, चाहे उसके लिए माँ के हाथों के छन्नी-ककना ही क्यों न बिक जाएँ।

भगवाना परलोक चला गया। घर में जो कुछ चूनी-भूसी थी सो उसे विदा करने में चली गई। बाप नहीं रहा तो क्या लड़के सुबह उठते ही भूख से बिलबिलाने लगे। दादी ने उन्हें खाने के लिए खरबूज़े दे दिए लेकिन बहू को क्या देती? बहू का बदन बुखार से तवे की तरह तप रहा था। अब बेटे के बिना बुढ़िया को दुअन्नी-चवन्नी भी कौन उधार देता बुढ़िया रोते-रोते और आँखें पोंछते-पोंछते भगवाना के बटोरे हुए खरबूज़े डलिया में समेटकर बाज़ार की ओर चली–और चारा भी क्या था? *(पृष्ठ सं०–16)*

प्रश्न

(क) लेखक ने समाज की किस कुप्रथा पर व्यंग्य किया है? 2

(ख) भगवाना की माँ के सामने कौन-सी समस्या आ खड़ी हुई? 2

(ग) पाठ तथा लेखक का नाम लिखिए। 1